17 जून 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 43, अंक : 6
जून (द्वितीय), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

विश्वविख्यात विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के जन्मदिन -

संकल्प दिवस सानन्द संपन्न

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा दिनांक 25 मई को सायंकाल संकल्प दिवस कार्यक्रम का आयोजन अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने की।

इस अवसर पर अंकुर जैन खड़ैरी ने **गुरु की दृष्टि में डॉ. भारिल्ल** विषय पर, दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने **रचनाओं के दर्पण में डॉ. भारिल्ल** विषय पर, आप्तअनुशील जैन दमोह ने **वस्तुस्वरूप का यथार्थ प्रतिपादक क्रमबद्धपर्याय और डॉ. भारिल्ल** विषय पर, विनय जैन मुम्बई ने **धर्म के तार्किक व्याख्याता : डॉ. भारिल्ल** विषय पर, अंकित जैन भगवां ने **भरत हृदय कमल भ्रमर : डॉ. भारिल्ल** विषय पर, पवित्र जैन आगरा ने **शोध-प्रबंध के दर्पण में डॉ. भारिल्ल** विषय पर एवं समर्थ जैन विदिशा ने **आपके कुशल निर्देशन में...** विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त मयंक जैन बण्डा एवं संयम जैन मड़देवरा द्वारा कविता पाठ किया गया। इसी प्रसंग पर उपाध्याय वरिष्ठ द्वारा निर्मित एक वीडियो का प्रसारण भी किया गया।

अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् डॉ. भारिल्ल के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला।

कार्यक्रम का मंगलाचरण आयुष जैन पिपरिया (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने एवं संचालन अखिल जैन मण्डीदीप (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने किया।

द्विदिवसीय अनुयोग गोष्ठी संपन्न

दिल्ली : यहाँ विश्वास नगर स्थित ब्राह्मी सुन्दरी कन्या विद्यानिकेतन द्वारा दिनांक 5 व 6 जून को अनुयोग गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री अजितजी जैन राजपुर रोड थे। **प्रथमानुयोग** वक्ता के रूप में पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, **करणानुयोग** वक्ता के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, **चरणानुयोग** वक्ता के रूप में डॉ. अनेकान्तजी जैन दिल्ली एवं **द्रव्यानुयोग** वक्ता के रूप में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर उपस्थित थे। विशिष्ट वक्ता पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. दर्शी जैन दिल्ली एवं संचालन पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना ने किया।

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर की साप्ताहिक गोष्ठियों के अन्तर्गत दिनांक 26 मई, 2020 को सायंकाल उपाध्याय वरिष्ठ द्वारा **जिनागम और जीवन जीने की कला** विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर थे।

इस अवसर पर पुष्प जैन आगरा ने **राग-शृंगार की कथाओं के परिप्रेक्ष्य में जीवन जीने की कला** विषय पर, सोहम शाह ने **क्या करणानुयोग में भी जीवन जीने की कला निहित है?** विषय पर, चेतन जैन गुढाचन्द्रजी ने **आचरण प्रधान आगम के आलोक में जीवन जीने की कला** विषय पर, अरविन्द जैन खड़ैरी ने **आत्मानुभूति और जीवन जीने की कला** विषय पर, आर्जव मोदी विदिशा ने **क्रमबद्ध की स्वीकृति में जीवन जीने की कला** विषय पर एवं समर्थ जैन हरदा ने **अनेकान्तात्मक पक्ष के संतुलन सहित ज्ञानियों के जीवन जीने की कला** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण सक्षम जैन ललितपुर, संचालन संदेश जैन दिल्ली एवं तकनीकी सहयोग आकाश शास्त्री अमायन व आकाश शास्त्री हलाज ने किया। गोष्ठी के मार्गदर्शक पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल थे।

श्रुतपंचमी पर्व सानन्द संपन्न

● **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा **माँ जिनवाणी और हम** विषय पर विशेष परिचर्चा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रातः श्रुतपंचमी पूजन का आयोजन हुआ, तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के उद्बोधन का लाभ मिला। इसके पश्चात् परिचर्चा प्रारम्भ हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली ने की। परिचर्चा में पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री भी उपस्थित थे।

परिचर्चा के अन्तर्गत स्वप्निल शास्त्री, अंकित शास्त्री, अरिहंत शास्त्री, संयम शास्त्री, संभव शास्त्री, पवित्र शास्त्री, आप्त अनुशील शास्त्री, अखिल शास्त्री, अमन शास्त्री एवं स्वानुभव शास्त्री ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

सम्पादकीय –

पुद्गल द्रव्य एवं वैज्ञानिक आविष्कार

5

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

पिछले अंक में हमने पुद्गलों के परस्पर व्याघातरहित होने की चर्चा वैज्ञानिक आविष्कारों के आधार पर की थी, अब यहाँ पुद्गल द्रव्य संबंधी विशेष...

(5) पुद्गल द्रव्य के चिन्तन से आध्यात्मिक प्रयोजन –

जैन दर्शनानुसार प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र है, कोई किसी का कर्त्ता-धर्ता नहीं है। जगत की कोई भी वस्तु अच्छी या बुरी नहीं होती, उनमें अच्छे-बुरेपन की कल्पना हमारी मिथ्या मान्यता है। दिखाई देनेवाली समस्त बाह्य वस्तुएँ पुद्गल द्रव्य हैं, सभी स्वतंत्र है। पुद्गल के अपने निजी गुण-धर्म-शक्तियाँ है, वह जीव के आधीन नहीं है। जब अपना कहा जाने वाला शरीर भी अपने नियंत्रण में नहीं है, तो फिर दूसरों पर अपना नियंत्रण एवं अधिकार रखने की बात भी खोटी कल्पना ही है। हम अपने बालों को सफेद होने से रोक नहीं सकते, हिलते हुये दांतों को या आँख, कान आदि की बिगड़ती हुई अवस्थाओं को रोक नहीं सकते तो फिर यह सोचना कितना हास्यास्पद है कि घर, परिवार, समाज मेरे अनुसार, मेरे निर्देशन में चलता है।

जब कोई भी वस्तु अपने अनुकूल परिणमित होती हुई दिखती है तो सुख का आभास होता है तथा जब वही वस्तु अपने प्रतिकूल परिणमित होती है तो दुख होता है। अत: हम पदार्थों को अपने अनुकूल परिणमित करने के विकल्प करते हैं; किन्तु वास्तविकता यही है कि सृष्टि का कोई भी पदार्थ परिणमन में हमारे विकल्पों की अपेक्षा नहीं रखता। आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के शब्दों में – 'अनादि-निधन वस्तुयें भिन्न-भिन्न अपनी मर्यादा सहित परिणमित होती हैं, कोई किसी के आधीन नहीं है, कोई किसी के परिणमित कराने से परिणमित नहीं होती।'[40] जब हम इस प्रकार का चिन्तन करते हैं तो सहज ही वीतराग भाव उत्पन्न होता है। पुद्गलों की स्वतंत्रता के चिन्तन से हमें स्वत: ही सहज रहने की अन्त: प्रेरणा मिलती है।

पुद्गल द्रव्य के विशेष गुण स्पर्श, रस, गंध, वर्ण बताये गये हैं और जीव के विशेष गुण ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य आदि कहे हैं। इससे यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि पुद्गल द्रव्य में सुख नाम का गुण ही नहीं है – ऐसी यथार्थ श्रद्धा होने पर भौतिकता की चकाचौंध में सुख की तलाश हेतु दौड़ स्वयमेव ही रुक जायेगी, क्योंकि सुख भौतिकता में नहीं; अनाकुलता में है। पर-वस्तुओं में नहीं; अपने में है। पाँचों इन्द्रियाँ मात्र पुद्गल द्रव्य को ही अपना विषय बनाती है, अत: इन्द्रियों के विषयों में भी पुद्गलपना होने से सुख नहीं है।

आज समाज/देश/दुनिया में जितने भी अपराध हो रहे हैं, उन सबके पीछे विषयों में सुख बुद्धि ही एक मात्र कारण है। जब उनमें सुख है ही नहीं, इस बात का यथार्थ निर्णय होगा, तब भौतिक सुखों की लालसा के लिये किये जाने वाले अपराधों से भी सहज ही बचा जा सकेगा।

इसप्रकार पुद्गल द्रव्य के स्वरूप का वास्तविक/आध्यात्मिक चिन्तन हमें संसार, शरीर एवं भोगों से विरक्ति प्रदानकर मोक्षमार्ग में बढ़ने हेतु प्रेरित करता है।

अंत में निष्कर्ष स्वरूप यही कहा जा सकता है कि जैनदर्शन सम्मत पुद्गल द्रव्य विषयक अवधारणायें यद्यपि विशुद्ध दार्शनिक विषय है; तथापि इनके सन्दर्भ में वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से भी चिन्तन किया जाना चाहिये। धर्म और विज्ञान एक दूसरे के विरोधी नहीं; पूरक हैं। दार्शनिक विचारधारायें शाश्वत सत्य को उजागर करती है, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण उपलब्ध साधनों के अनुरूप वर्तमान सत्य को। अत: हमें अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर ही निर्णय करना चाहिये। इन दार्शनिक विषयों का आध्यात्मिक चिन्तन तो हमारे जीवन सुधार के लिये परम आवश्यक है ही।

हम सभी इन विषयों के सम्यक् चिन्तनपूर्वक आत्मशान्ति के मार्ग पर अग्रसर हों, इसी भावना के साथ विराम लेता हूँ। ●

40. मोक्षमार्गप्रकाशक, अधिकार-3, पृष्ठ-52

शोक समाचार

(1) लेक्जिंगटन (अमेरिका) निवासी डॉ. महावीरजी शाह का दिनांक 14 अप्रैल को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप पिछले 20 वर्षों से JAANA के सदस्य थे। विदेशों में जिनशासन की प्रभावना में आपका अविस्मरणीय योगदान रहा है।

आपने डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित ज्ञायकभाव प्रबोधिनी टीका सहित ग्रंथाधिराज समयसार और छहढाला का सार ग्रंथ के सेट 2000 की संख्या में अमेरिका के सभी नगरों में घर-घर पहुंचाने का एवं पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन की सी.डी. और डॉ. भारिल्ल के प्रवचन की सी.डी. भी आपने घर-घर पहुंचाने का महान कार्य किया है।

(2) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती राजकुमारी जैन लीला धर्मपत्नी स्व. श्री महावीरप्रसादजी जैन लीला का दिनांक 30 मई को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं एवं निरंतर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया करती थीं।

(3) शाहगढ (म.प्र.) निवासी तीर्थधाम सिद्धायतन-द्रोणगिरि के ट्रस्टी श्री ब्या ज्ञानचंदजी जैन का दिनांक 8 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे एवं द्रोणगिरि में तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में सक्रिय सहयोग प्रदान करते थे।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

''केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलम्'' योजना की देशभर में धूम

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री समयसार विद्यानिकेतन आत्मायतन द्वारा श्री श्रुतपंचमी महापर्व के अवसर पर ''**केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलम्**'' योजना आयोजित की गई। यह योजना श्रुतपंचमी के एक सप्ताह पूर्व ही प्रारम्भ की गई, जिसके अन्तर्गत चार चरणों में जिनवाणी सजाओ प्रतियोगिता हुई।

प्रतियोगिता के अन्तर्गत प्रथम चरण में जिनवाणी को धूप लगाने की फोटो, द्वितीय चरण में घर पर स्थित जिनवाणी मंदिर की साफ–सफाई की फोटो, तृतीय चरण में जिनवाणी मंदिर के उद्घाटन की तैयारी की फोटो एवं चतुर्थ चरण में जिनवाणी मंदिर के उद्घाटन की फोटो व वीडियो भेजनी थी। देशभर से अनेक साधर्मियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ग्वालियर थे।

प्रतियोगिता का ऑनलाइन भव्य समापन समारोह दिनांक 30 मई को किया गया, जिसकी अध्यक्षता अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजितजी बड़ौदा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. सतीशजी शास्त्री (डी.पी.एस.) अलीगढ थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला भाऊ का बाजार ग्वालियर के विद्यार्थियों ने किया। तदुपरान्त अध्यक्ष, मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि महोदय का उद्बोधन हुआ।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान किंजल भारिल्ल राघौगढ, द्वितीय स्थान समीक्षा जैन डबरा व लक्ष्मी जैन ग्वालियर तथा तृतीय स्थान विशुद्धि गाडेकर महाराष्ट्र, अभी जैन टीकमगढ व अंश सोनटक्के हिंगोली ने प्राप्त किया। सांत्वना पुरस्कार – आर्जव भुस कारंजा, संभव जैन खतौली, सुनीता जैन ग्वालियर, समकित जैन गोहद, सालवी सर्राफ सागर, चंचल जैन केकड़ी, भारती जैन दमोह, मंजू जैन ग्वालियर, सुमन जैन उत्तरप्रदेश, पद्मा गंगवाल रतलाम, मुस्कान सर्राफ सागर को दिया गया।

सभी को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर ग्वालियर द्वारा ऑनलाइन प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार राशि प्रदान की गई। प्रतियोगिता की रूपरेखा विद्यानिकेतन के निर्देशक पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ने एवं क्रियान्वयन श्रीमती अंजलि जैन व शाश्वत जैन ने किया।

अन्त में समयसार विद्यानिकेतन के अध्यक्ष श्री सतीशजी जैन ठेकेदार ने सभी साधर्मीजनों को आत्मायतन पधारने का आमंत्रण दिया, समयसार विद्यानिकेतन की प्राचार्या श्रीमती अंजलि जैन ने सभी अतिथियों, प्रतियोगियों व साधर्मियों का आभार व्यक्त किया।– **धनेन्द्रकुमार शास्त्री**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

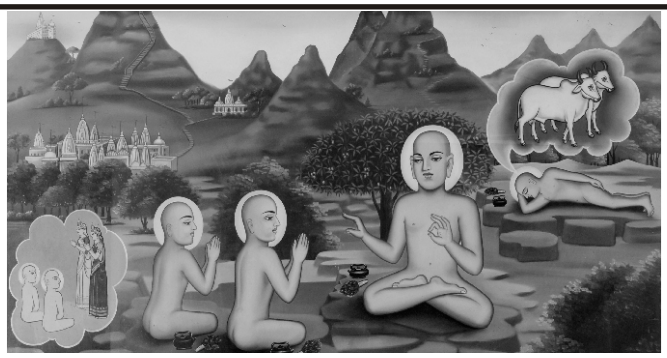

(श्रुतपंचमी, पृष्ठ–1, का शेष...)

कार्यक्रम का संचालन समर्थ शास्त्री व आकाश शास्त्री ने किया।

● **जबलपुर (म.प्र.) :** प्रथम श्रुतस्कंध के अवतरण दिवस श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 26 मई को जैनेक्स्ट एवं चहकती चेतना पत्रिका परिवार जबलपुर द्वारा श्रुतोत्सव का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में प्रात: श्रुतपंचमी पूजन के पश्चात् एक आध्यात्मिक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित देवांगजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सुदीपजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विवेकजी जैन मुम्बई, पण्डित समकितजी शास्त्री भोपाल, पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली, विदुषी अनुप्रेक्षा शास्त्री मुम्बई आदि युवा विद्वानों ने प्रासंगिक एवं सारगर्भित विचार व्यक्त किये। दोपहर की सभा में पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ एवं संयमजी जैन खैरागढ द्वारा श्रुतपंचमी पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुआ। तदुपरान्त आध्यात्मिक कवि सम्मेलन संपन्न हुआ, जिसमें अनेक युवा कवियों ने अपनी आध्यात्मिक रचनाओं से तत्त्वज्ञान की प्रस्तुति की। रात्रि में पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा जिनवाणी प्रकाशन के इतिहास की पूरा घटना का विस्तार से वर्णन किया गया।

समस्त कार्यक्रम विरागजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ।

● **कोटा (राज.) :** यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा ऑनलाइन विद्वत्संगोष्ठी श्री प्रेमचंदजी बजाज की अध्यक्षता में संपन्न हुई, जिसके मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित संजयजी जेवर एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा उपस्थित थे।

इस अवसर पर आदित्य जैन पिड़ावा, अभिनय जैन कोटा, समकित बांझल, समकित मोदी, उर्विष जैन पिड़ावा ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त सम्यक् पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा शास्त्र सज्जा की गई, जिसमें रिद्धि जैन, आरोही जैन, चर्या जैन ने बहुत सुन्दर जिनवाणी सजायी। रात्रि में शास्त्र भक्ति का भी आयोजन हुआ।

गोष्ठी का मंगलाचरण आकाश जैन बादकपुर एवं संचालन पण्डित नीतेशजी कासलीवाल ने किया। अन्त में आभार प्रदर्शन मोहित जैन बण्डा ने किया।

अरे अब तो निर्णय कर मैं कौन हूँ

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

तो लो, हो गया न दूध का दूध और पानी का पानी! तू स्वयं भी समझ ही गया होगा और सारी दुनिया ने भी जान ही लिया कि तू किसे ''मैं'' समझता है, जानता और मानता है।

तेरे व्यवहार से यह स्पष्ट है कि तू इस ''एकक्षेत्रावगाह सम्बन्ध'' (इस नरदेह और आत्मा के मिश्रण श्रीमान् x y z) को ही ''मैं'' मानता है तथा इस देहदेवल में विराजमान पर इस देह से सर्वथा भिन्न निज भगवान आत्मा की न तो तुझे खबर है और न ही परवाह।

और हाँ! कदाचित् यह जानकर तुझे सन्तोष मिले कि ऐसा मानने वाला इस जगत में तू अकेला नहीं है, सभी लोग ऐसा ही मानते हैं।

क्या आपको ऐसा नहीं लगता है?

''प्रत्यक्षं किम् प्रमाणं'' देखा न! यह अदना सा कोरोना अचानक ही हमारे हंसते-खेलते जीवन के बीच आ धमका ''ना जान ना पहिचान, बड़े मियाँ सलाम'' और हम सबको झकझोरकर रख दिया। बड़े-बड़े 56 इंच के सीने वाले भी इसके सामने नतमस्तक हो गये। सारा देश सहम गया, सारा विश्व ठहर गया। सभी लोग अपने-अपने घर तक, अपने अपनों तक और सिर्फ अपने तक सिमट गये। किसी चीज की परवाह न रही। क्या तो धन्धा-व्यापार और क्या लोक व्यवहार, सब कुछ स्थगित हो गया। न तो कोई बुरा मानने वाला रहा और न ही कोई मनाने वाला।

शादी-ब्याह और मृत्यु (क्रियाकर्म) जैसे सामाजिक कार्यक्रम नितान्त व्यक्तिगत बनकर रह गये। देवदर्शन जैसे व्यक्तिगत (ऐसे कुछ लोगों के लिये जो यह सब मात्र दिखावे या सामाजिक सम्पर्क के लिये करते हैं, ये सामाजिक कार्यक्रम हो सकते हैं) कार्यक्रम तो स्थगित ही हो गये। वह शिक्षा जिसके प्रति लोग दीवाने (आतंकित) से दिखाई देते थे, अब नाचीज़ हो गई और तो और सारे के सारे खाली पड़े अस्पताल इस बात के प्रमाण हैं कि या तो लोग बीमार होना तक भूल गये या अन्य सभी बीमारियाँ ही छुट्टी पर चली गयीं।

सभ्यता के विकास के साथ खरपतवार की तरह विकसित हो गई मानव की कृत्रिम आवश्यकताएं जैसे पर्यटन आदि भी अब आवश्यक न रहे।

कहने का तात्पर्य यह है कि **मात्र मूलभूत आवश्यकताओं की न्यूनतम पूर्ति के अलावा सब कुछ स्थगित हो गया।**

यह सब किसके लिये, सिर्फ इस जीवन को बचाने के लिये ही न?

हम सभी आत्मकल्याण के लिये तो यह सब कर नहीं रहे हैं! हालांकि आत्मकल्याण के लिये भी यही सब करना आवश्यक है। इसीलिये तो मैं कह रहा हूँ कि हम इस शरीर को या इस शरीर के साथ हमारे संबंध को ही ''मैं'' मानते हैं, आत्मा को नहीं। यदि हम अपने आपको ''भगवान आत्मा'' मानते तो क्या उसके कल्याण के लिये यही सब न करते? पर उसका तो हमें विचार तक नहीं आता है।

ठीक है, पहले हमें यह लगता था कि हमारी वर्तमान भूमिका में हमें यह सब करना सम्भव नहीं है, पर आज सबसे बड़ी उपलब्धि तो यह हुई कि अब कोई यह कहने वाला नहीं रहा कि ''आखिर इन सबके बिना जीवन कैसे चल सकता है, यह सब तो जीवन के लिये आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य है''। आज यह प्रत्यक्ष है कि यदि चाहत हो तो सब कुछ सम्भव है। आज सब लोग यह बात समझ गये कि इन सबके बिना किस प्रकार सुकूनपूर्वक जीवन व्यतीत किय जा सकता है, अन्यथा अब तक तोा सभी सीमाएं टूट चुकी थीं। अभी कुछ दशकों पूर्व तक अपनी जन्मभूमि तक (जन्म के गांव-शहर तक) सीमित रहकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन सम्पूर्णपने जी लेने वाले हम लोग ''पापी पेट'' के नाम पर अब सारी दुनिया नापते फिरने लगे थे और मानो यह पृथ्वी छोटी और अपर्याप्त हो, हम चांद और मंगल के दरवाजे पर तक दस्तक देने लगे थे। आज यह सब रुक गया है, सब कुछ ठहर गया है।

जानते हैं यह सब किसलिये?

मात्र इसलिये कि हम इस शरीर और आत्मा के सम्बन्ध को ''मैं'' मान रहे हैं और इस सम्बन्ध का विच्छेद अर्थात् एक दिन निश्चित ही आने वाली मृत्यु कहीं आज ही न आ धमके, बस!

अरे! **यह सब इतना बड़ा त्याग और तपश्चर्या इस जीवन को, देह और जीव के इस एक क्षेत्रावगाह सम्बन्ध को मात्र कुछ दिन और टिकाये रखने के लिये की जा रही है।**

क्या कभी हमने इसका शतांश भी प्रयत्न या समर्पण आत्मकल्याण के लिये किया?

नहीं ना?

बस स्पष्ट हो गया कि हम आत्मा को नहीं इस शरीर और आत्मा के मिश्रण को ''मैं'' मानते हैं।

कल तक जो लोग यह शिकवा करते न थकते थे कि मरते समय कोई साथ नहीं देता आज इस बात से चिंतित हैं कि कहीं ऐसा न हो कि हम सब एक साथ ही मर जाएं।

हमारा आज का उक्त त्याग और तपश्चर्या यह बतलाती है कि हम स्वयं अपनी कितनी परवाह करते हैं। अपनी मृत्यु टालने के लिये, अपने जीवन के लिये हम क्या नहीं कर सकते हैं, क्या कीमत नहीं चुका सकते हैं। अब बस इस निर्णय की जरूरत है कि ''मैं कौन हूँ?''

आज हम इस शरीर को ''मैं'' मान रहे हैं तो इसे बनाये रखने के लिये यह सब कर रहे हैं, कल यदि हमें यह तथ्य समझ में आ जाये कि यह मैं नहीं, **''मैं तो इस शरीर से सर्वथा भिन्न एक ज्ञानस्वभावी जीवतत्त्व हूँ, जिसे आत्मा कहते हैं, जो अनादिकाल से है और अनंतकाल तक रहेगा। आज तक मैंने अपने इस स्वरूप को नहीं जाना इसलिये संसार में भटककर जन्म-मरण के दु:ख भोग रहा हूँ'' तो हम इस अनादि-अनंत आत्मा को अनंतकाल तक के लिये अनन्त सुखी करने के लिये क्या कुछ नहीं कर गुजरेंगे? क्या तब हम इस आत्मा (स्वयं) के लिये भी इतने ही Caring नहीं हो जाएंगे?**

यह सब कोई कल्पना की बातें नहीं हैं। हमारे वे मुनिराज जो इस तथ्य को समझकर स्वीकार कर चुके हैं, यही सब तो करते हैं। यदि हमें भी अपना कल्याण करना है तो इसी मार्ग पर चलना होगा। मार्ग तो यही है, अन्य कोई मार्ग नहीं। और हाँ! **तू जब भी अपने लिये यह मार्ग चुनेगा तब इसी प्रकार की परिस्थितियों में यह निर्णय करना होगा। मुनिदशा धारण करने से पूर्व तू गृहस्थ ही तो होगा और गृहस्थों की जो परिस्थितियाँ होती हैं, वे तेरी भी होंगी। तुझे उचित और दृढ निर्णय करके उन परिस्थितियों को बदलना होगा।**

(शेष पृष्ठ 7 पर...)

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट
द्वारा आयोजित

43 वाँ आध्यात्मिक E – शिक्षण शिविर

रविवार 19 जुलाई से मंगलवार 28 जुलाई 2020 तक

अग्रिम आमंत्रण

» **वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए यह शिविर ऑनलाइन आयोजित किया जायेगा।**

» **इस शिविर का सम्पूर्ण प्रसारण Zoom App और टोडरमल स्मारक के Youtube चैनल पर किया जायेगा।**

» **शिविर की विस्तृत आमंत्रण पत्रिका शीघ्र भेजी जाएगी।**

» **विधान, पूजन, भक्ति का अपूर्व आनन्द।**

» **प्रवचन, गोष्ठी, व्याख्यानमाला के माध्यम से तत्वज्ञान की भरपूर वर्षा।**

» **बालको के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन एवं रोचक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम।**

संपर्क- डॉ. शान्तिकुमार पाटिल - 97856 49333 | प. पीयूष शास्त्री - 97856 43202
प.जिनकुमार शास्त्री - 80724 46379

निवेदक : समस्त ट्रस्टीगण, पंडित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

अवश्य लाभ लीजिये

शिविरों की श्रृंखला का महाआयोजन

आचार्यकल्प पंडित टोडरमल जी की 300वीं जन्म जयंती के अवसर पर

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपार्ले, मुंबई एवं
श्री कुंदकुंद कहान दिगंबर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुंबई के तत्त्वावधान में
श्री परमागम प्रभावना ट्रस्ट, पुणे एवं
श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन परमागम मंदिर ट्रस्ट,
साधना नगर, इंदौर के आयोजकत्व में
राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित

शाश्वत पर्व अष्टान्हिका के मंगल अवसर पर

ऑनलाइन
जिन देशना
आध्यात्मिक शिक्षण शिविर
एवं श्री नंदीश्वर द्वीप मंडल विधान

रविवार, 28 जून से रविवार, 5 जुलाई 2020 तक

शिविर समागम के लाभ

- राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार ऑनलाइन विधान का आयोजन
- प्रतिदिन देश के विभिन्न सिद्धक्षेत्र एवं अतिशय क्षेत्रों की तीर्थ यात्रा
- घर बैठे ही देश के उच्च कोटि के विद्वानों के प्रवचनों का लाभ
- वरिष्ठ एवं युवा विद्वानों का अद्भुत संगम
- आध्यात्मिक संगोष्ठी
- अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन
- और भी अनेक लाभ
- विस्तृत जानकारी शीघ्र ही

विशेष सहयोग

JAINEXT और
चहकती चेतना परिवार, जबलपुर

6 जुलाई 2020
वीर शासन जयंती महोत्सव

निर्देशक	मुख्य संयोजक	संयोजक
विराग शास्त्री	पंडित नागेश जैन	पंडित अमित अरिहंत
जबलपुर	पिड़ावा	मंडावरा
7000104951	9414687131	84420704031

निवेदक

अध्यक्ष – श्री अनंतराय ए सेठ, मुंबई
कार्यकारी अध्यक्ष – डॉ. किरण शाह, पुणे
महामंत्री – श्री विजय बड़जात्या, इंदौर
मंत्री – वीनू भाई शाह, मुंबई

विशेष – विस्तृत जानकारी शीघ्र ही भेजी जायेगी ।

(पृष्ठ 4 का शेष...)

यह कार्य तुझे स्वयं करना होगा, तेरे लिये यह कार्य कोई और नहीं कर सकता, अन्य लोग तो सदा की तरह अवरोध ही बन सकते हैं।

अब तक तो हमने चर्चा की कि आज कोरोना काल में हमने क्या–क्या करना छोड़ दिया, पर यह तो नहीं करना हुआ। अब प्रश्न यह है कि हम कर क्या रहे हैं?

सत्य तो यह है कि हममें से अधिकतर लोग मात्र दिन काट रहे हैं। दिन काटने के दो तरीके हुआ करते हैं। जैसा कि इस संस्कृत श्लोक में कहा गया है –

काव्य शास्त्र विनोदेन:, कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणाम्, निद्रया कलहेन वा।।

बुद्धिमान लोगों का समय काव्य–शास्त्रों का आनन्द लेते हुए व्यतीत होता है और मूर्खों का समय व्यसनों में, सोने में और झगड़ों में नष्ट होता है।

निश्चित ही हम सब इसी प्रकार अपना समय नष्ट कर रहे होंगे। अब जमाना बदल गया है, हम काव्य शास्त्रों की जगह टी.वी. की टीआरपी बढा रहे होंगे। समाचार सुनकर या सीरियल देखकर समय गंवा रहे होंगे, कोरोना पुराण में व्यस्त होंगे या ताश खेलकर, सोकर या एक–दूसरे से उलझकर समय व्यतीत कर रहे होंगे। **यह हम क्या कर रहे हैं? हम अपना जीवन बढा रहे हैं या संसार? इस समय का उपयोग हमें अपना संसार भ्रमण बढाने में नहीं संसार काटने में करना है।**

यदि हम ऐसा कर पाए तो यह कोरोना दुनिया के लिये भले ही महामारी और महासंकट हो, हमारे लिये तो यह महामहोत्सव साबित होगा। इस संकट को महोत्सव में बदलना हमारे अपने हाथ में है।

जो हमने छोड़ा वह तो उत्तम है, पर करना हमें यह नहीं है जो हम कर रहे हैं। क्या यही सब करने के लिये हम अपनी जीवनरक्षा करना चाहते हैं, लम्बे समय तक जीवित रहना चाहते हैं? यदि इसी तरह जीना है तो जीवन और मरण में फर्क ही क्या रहा?

हमारे आदर्श तो मुनिराज हैं, उन्हीं का अनुसरण करते हुए इस समय का उपयोग हमें तत्त्वाभ्यास में करना है। अपना स्वरूप समझकर उसमें स्थित होने में करना है। हमें वही करना है जो जंगल में मुनिराज करते हैं।

हमारे मुनिराज संसार के इन्फेक्शन से बचने के लिये Self Corentine होकर निज में स्थित हो जाते हैं। संसार की समस्त कृत्रिम आवश्यकताओं को छोड़कर मात्र जीवन के लिये अपरिहार्य न्यूनतम शुद्ध–प्रासुक भोजन ग्रहण करते हैं और स्वयं सम्पूर्णत: आत्मसाधना के लिये समर्पित हो जाते हैं। आत्मलीन होकर अपने स्वरूप का विचार करते हैं और विचारों की शृंखला को तोड़कर निर्विकल्प हो जाते हैं। देव–शास्त्र–गुरु पूजन की जयमाला में कहा भी है न कि –

जब जग विषयों में रचपचकर गाफिल निद्रा में सोता हो
अथवा वह शिव के निष्कंटक पथ में विषकंटक बोता हो
हो अर्ध निशा का सन्नाटा, वन में वनचारी चरते हों
तब शांत निराकुल मानस तुम, तत्त्वों का चिंतन करते हो

यह सब हम भी कर सकते हैं, हमें यह करना ही होगा। तप–त्याग, पुरुषार्थ और समर्पण में हम भी पीछे नहीं हैं, पर अपने स्वरूप की नासमझी या मिथ्या समझ हमारे पुरुषार्थ को गलत दिशा देकर अनर्थ का सृजन कर रही है।

हमारे और आत्मकल्याण के बीच यदि कोई बाधा है तो हमारे समर्पण या पुरुषार्थ की कमी नहीं वरन् मात्र अपने आपको नहीं पहिचानना, अपने स्वरूप को नहीं पहिचानना है।

इसलिये हे भव्य! अब तो निर्णय कर कि ''मैं कौन हूँ''।

आज और अभी
तेरा कल्याण होगा।

जैन संस्कार ई शिक्षण शिविर - मेरठ

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर की प्रेरणा से, तीर्थधाम चिदायतन हस्तिनापुर मेरठ के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मेरठ द्वारा दिनांक 25 से 31 मई तक 'जैन संस्कार ई शिक्षण शिविर' आयोजित किया गया।

दिनांक 25 मई को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री पवनजी जैन मंगलायतन, श्री अजितजी जैन दिल्ली एवं श्री सुरेशजी जैन रितुराज (राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय जैन मिलन) का उद्बोधन हुआ।

प्रात:काल एवं दोपहर में बाल एवं प्रौढ वर्ग को पाँच भागों में विभाजित करके कक्षाओं का संचालन हुआ। प्रात:काल जिनेन्द्र–पूजन, सायंकाल जिनेन्द्र–भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

सायंकाल आयोजित सामूहिक कक्षा में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री पवनजी मंगलायतन, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर में पंच परमेष्ठी, देव–शास्त्र–गुरु, जीव–अजीव (सामान्य), सच्चे जैन, णमोकार महामंत्र, चार मंगल, तीर्थंकर भगवान, जीव–अजीव (विशेष), पाप, कषाय, गतियाँ, द्रव्य, चार अनुयोग, द्रव्य–गुण–पर्याय, तीन लोक, भक्तामर स्तोत्र आदि अनेक विषय समझाए गये।

प्रौढ कक्षा का संचालन पण्डित निखिलजी शास्त्री मेरठ द्वारा हुआ।

दिनांक 31 मई को हजारों साधर्मियों ने ऑनलाइन परीक्षा दी एवं सायंकाल परीक्षा परिणाम के साथ शिविर का समापन समारोह हुआ, जिसमें श्री जे.के. जैन शामली, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, श्रीमती बीनाजी देहरादून, श्री अजितजी बड़ौदा, श्री आई.एस. जैन मुम्बई, श्री आशीषजी जैन शामली एवं श्री निशांत जैन आईएएस मेरठ का उद्बोधन प्राप्त हुआ। अन्त में श्री सौरभजी जैन ने सबका आभार प्रकट किया एवं श्री अजयकुमारजी ने संबोधन देकर सभा का समापन किया।

शिविर निर्देशक अजय जैन व सौरभ जैन के साथ साथ रोहित जैन, संयम जैन, आयुष जैन, अपार जैन, पूजा जैन, अतुल जैन एवं पाठशाला की पूरी टीम विवेक शास्त्री, समकित शास्त्री, सुदीप शास्त्री आदि ने कार्यक्रम में तकनीकी सहायता प्रदान की।

समस्त कार्यक्रम ज़ूम एप, यूट्यूब एवं फेसबुक के माध्यम से प्रसारित किया गया। **– मुकेशचंद जैन (अध्यक्ष), सौरभ जैन (महामंत्री)**

गुरुवाणी मंथन शिविर संपन्न

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित पंचम गुरुवाणी मंथन शिविर ऑनलाइन संपन्न हुआ, जिसका उद्घाटन दिनांक 27 मई को श्री नेमिषभाई शांतिलाल शाह मुम्बई द्वारा किया गया।

दिनांक 27 मई से 31 मई तक आयोजित इस शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल जिनेन्द्र-पूजन एवं गुरुदेवश्री द्वारा नियमसार (गाथा 47-48) पर सी.डी. प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया ने गुरुदेवश्री के प्रवचनों के मुख्य बिन्दुओं के आधार पर चर्चा की। दोपहर की सभा में आध्यात्मिक पाठ के पश्चात् गुरुदेवश्री द्वारा प्रवचनसार (गाथा 192) पर सी.डी. प्रवचन हुआ, जिसके मुख्य बिन्दुओं पर पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर द्वारा चर्चा की गई। रात्रि में जिनेन्द्र-भक्ति के उपरांत समयसार (गाथा 15) पर हुए गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों पर पण्डित चेतनभाई मेहता राजकोट द्वारा चर्चा की गई। अन्तिम दो दिनों में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा गुरुदेवश्री के समयसार कलश 120 पर हुए प्रवचनों पर चर्चा हुई। इसप्रकार संपूर्ण शिविर गंभीर आध्यात्मिक चर्चा के साथ संपन्न हुआ। इसके साथ ही प्रतिदिन एक-एक तीर्थक्षेत्र का वीडियो भी दिखाया गया।

विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत मुमुक्षु समाज के विद्वत्रत्न पण्डित लालचंदभाई मोदी, बाबू जुगलकिशोरजी युगल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा एवं श्री कांतिभाई मोटानी को भी विशेषरूप से याद किया गया।

कार्यक्रम में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अनंतराय ए. शेठ, महामंत्री श्री बसंतभाई एम.दोशी, मंत्री श्री महिपालजी ज्ञायक एवं सहमंत्री श्री विनुभाई शाह के उद्बोधन का भी लाभ प्राप्त हुआ।

समस्त कार्यक्रम निर्देशन श्री विरागजी शास्त्री के नेतृत्व में मुम्बई के संगठन जैनेक्स्ट के सहयोग से एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई के विशेष सहयोग से संपन्न हुआ।

सम्मानित हुए
Jain's Got Talent के प्रतिभागी

जयपुर (राज.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर एवं सर्वोदय अहिंसा अभियान के संयुक्त तत्त्वावधान में विविध क्षेत्रों में रुचि रखने वाली प्रतिभाओं के लिये अन्तरराष्ट्रीय ऑनलाइन प्रतिस्पर्धा **Jain's Got Talent** का आयोजन किया गया, जिसमें 14 प्रतियोगिताओं में 743 प्रतिभागियों ने भाग लिया। समस्त विजेताओं को दिनांक 7 जून को विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, मुख्य अतिथि श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर थे।

विविध प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत भजन प्रतियोगिता में नेहा शाह सोलापुर, वाद्ययंत्र में अरचेश पाटोदी इन्दौर, नृत्य में वीनस जैन मुम्बई, मोनो एक्टिंग में विदेही व नियति जैन दिल्ली, ड्रॉइंग में प्रमिति जैन जयपुर, स्केचिंग में प्रजल जैन खनियांधाना, कंठपाठ में प्रशम जैन पंढरपुर व अनन्या जैन मेरठ, ग्राफिक्स डिजाइनिंग में विनीत जैन हैदराबाद व निपुण जैन भोपाल, वीडियो मेकिंग में लिपि व हर्षिता जैन उदयपुर, कहानी कथन में विशुद्ध जैन सनावद, आर्टिकल में श्रीमती सरोज जैन दमोह, कविता में मोहिनी जैन ललितपुर, प्रोजेक्ट मेकिंग में यश व उत्कर्ष जैन अकोला, रंगोली में सपना दोशी पूना, भाषण में विदेही व नियति जैन दिल्ली को सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त प्रयत्न जैन भोपाल को बीट बॉक्सिंग, आरोही जैन कोटा को तीसरी आंख, विदेही व नियति जैन दिल्ली तथा हर्षिता व लिपि जैन उदयपुर को मल्टी टेलेंटेड का पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन संयम शास्त्री व सन्देश शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन इंजी. अनिलजी जैन दिल्ली ने किया। आयोजन को सफल बनाने में ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, संजयजी शास्त्री जयपुर व दीपकराजजी जैन छिन्दवाड़ा के सहयोग के साथ-साथ तकनीकी सहयोग विनीतजी शास्त्री मुम्बई व फैडरेशन के सभी सदस्यों का मिला।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2020

प्रति,